वित्तीय शिक्षण

अभ्यास पुस्तिका

छठी कक्षा

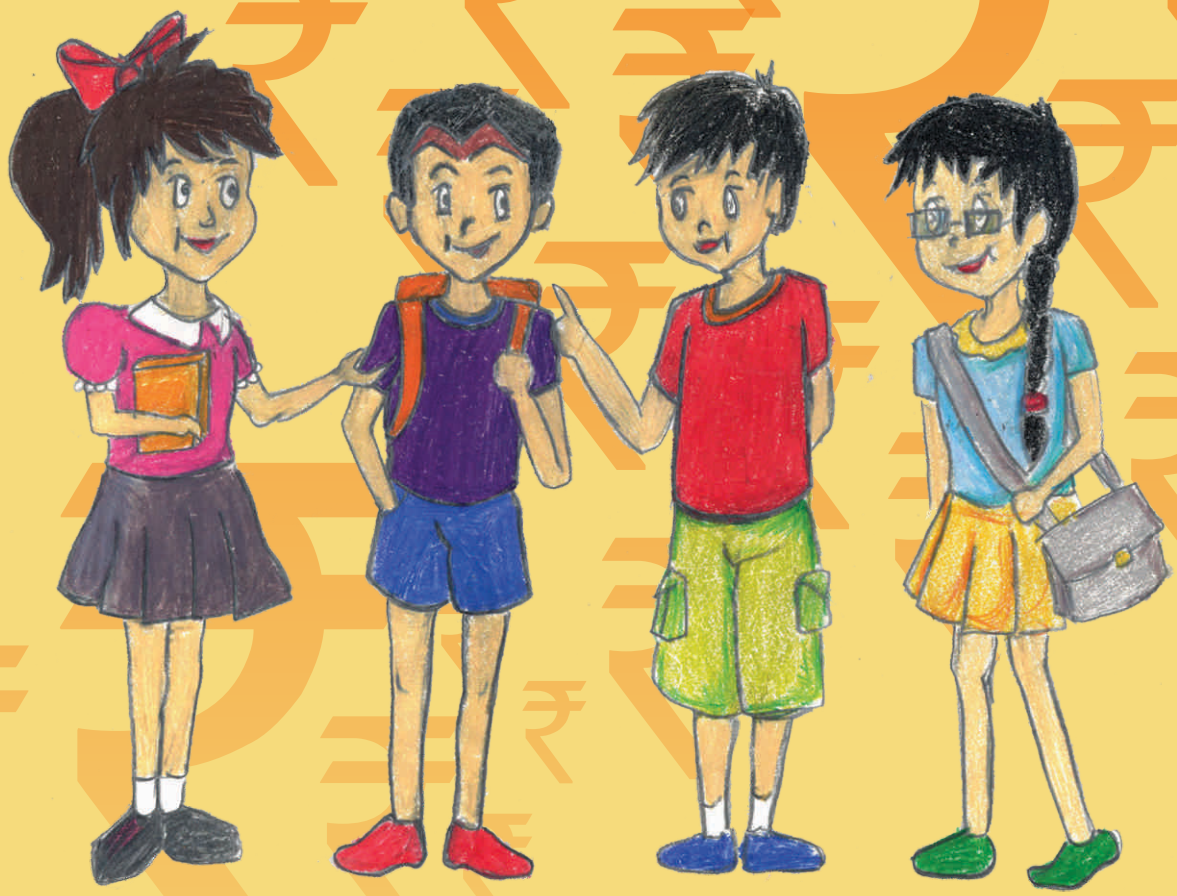

वित्तीय शिक्षण अभ्यास पुस्तिका - छठी कक्षा हेतु

प्रारूप संस्करण

स्पष्टीकरण

यह पुस्तक पाठक को वित्तीय मामलों के संबंध में साक्षर बनाने के निस्वर्थ प्रयोजनार्थ, अध्ययन एवं अध्यापन के लिए प्रस्तुत की जा रही है। पाठक को किसी वित्तीय उत्पाद/उत्पादों या सेवा/सेवाओं के संबंध में कोई निर्णय लेने में, पुस्तक की किसी विषय–वस्तु से प्रभावित करने का कोई इरादा नहीं है ।

प्रकाशक : सचिव, केंद्रीय माध्यामिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केंद्र, 2, सामुदायिक केंद्र
प्रीत विहार, दिल्ली–110301

रूपरेखा, विन्यानस एवं मुद्रण : राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षण केंद्र हेतु
राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान
भूखण्ड सं. 82,सेक्टर 17, वाशी, नवी मुंबई–400703
फोन : +9122-66735100 | फैक्स : +9122-66735110

वेबसाइट : ncfeindia-org

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण [1]प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा
[2]और राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई॰ को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्त्तव्य

51 क. मूल कर्त्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले;

[1](ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिये शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

1. संविधान (छयासीवां संशोधन) अधिनियम, 2002 की धारा 4 द्वारा प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the[2] unity and integrity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

FUNDAMENTAL DUTIES

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

[1](k) who is a parent or guardian to provide opportunities for education to his/her child or, as the case may be, ward between age of 6 and 14 years.

---

1. Subs. by the Constitution (Eighty - Sixth Amendment) Act, 2002

भूमिका

छठी से दसवीं कक्षाओं के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के वित्तीय शिक्षण पाठ्यक्रम की विशेषता उसकी सशक्त गतिशीलता, सतत् विकास और उन्नयन है। इस पाठ्यक्रम की रचना कार्यमूलक दृष्टिकोण को अपनाते हुए की गई है । मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के मौजूदा परिवेश में समाज, विस्फोटक ज्ञान–सृजन और घातीय रफ्तार से बढ़ती हुई तकनीक से प्रभावित होता है ।

आधारभूत वित्तीय अवधारणाओं की अपनी समझ को बेहतर बनाने और अपने दैनिक जीवन में इन अवधारणाओं का समुचित उपयोग करने के लिए हमें वित्तीय शिक्षण की आवश्यकता है। हमें विभिन्न वित्तीय उत्पादों को जानने और वित्तीय जोखिमों एवं अवसरों से अधिकाधिक परिचित रहने की जरूरत है ताकि हम सभी सुविज्ञ निर्णय ले सकें और उसके परिणामस्वरूप अपने वित्तीय स्वास्थ्य में सुधार कर सकें।

वित्तीय शिक्षण का दर्शन यह है कि विद्यार्थी अपनी आवश्यकता के अनुरूप जीवन में धन की भूमिका, बचत की जरूरत और उपयोग, अपनी बचतों को निवेशों में रूपान्तरित करने, बीमा के माध्यम से सुरक्षा हेतु औपचारिक वित्तीय प्रणाली तथा विभिन्न विकल्पों का प्रयोग करने की समझ प्राप्त कर सकें और वे इन विकल्पों की विशेषताओं के वास्तिविक महत्व को जान सकें।

वित्तीय शिक्षण से हमें, बचत के महत्व और उसके लाभों, ऐसे अनुत्पादक ऋणों से दूर रहने की आवश्यकता, जो हमारी चुकाने की सामर्थ्य के बाहर हों, औपचारिक वित्तीय प्रणाली से उधार लेने, ब्याज की अवधारणा, चक्रवृद्धि ब्याज के प्रभाव, धन के सामयिक–मूल्य, मुद्रा–स्फीति, बीमा की आवश्यकता, वित्तीय क्षेत्र के प्रमुख संस्थानों जैसे मंत्रालयों, विनियामकों, बैंकों, शेयर बाजारों एवं बीमा कंपनियों की भूमिका और जोखिमों तथा पुरस्कारों के बीच संबंध की संकल्पोना के बारे में अधिकाधिक जानकारी हासिल करने में मदद मिलेगी।

इसके माध्यम से हम विभिन्न वित्तीय विनियामकों द्वारा प्रदत्त वित्तीय उत्पादों तथा सेवाओं का समुचित मूल्यांकन कर धन का कारगर ढंग से प्रबंध करके स्वयं और दूसरों की मदद कर सकते हैं।

वित्तीय शिक्षण विशेष रूप से उन लोगों के लिए मददगार होगा जो अभी वित्तीय सेवाओं से वंचित हैं।

इस अभ्यास पुस्तिका का उद्देश्य वित्तीय सेवाओं तक पहुँच, विभिन्न प्रकार के उत्पादों की उपलब्धता तथा उनकी विशेषताओं के संबंध में विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करना और वित्तीय सेवाओं के ग्राहक के रूप में उनके अधिकारों एवं दायित्वों को समझाना है।

यह विषय पढ़ाने वाले अध्यापकों को, अपने छात्रों को इसका लाभ देने के लिए पाठ्य–विषय के कारगर उपयोग, अध्यापन पद्धति, समूह कार्य एवं स्वतंत्र व्यक्तिगत कार्य के प्रबंधन, बड़ी कक्षाओं की व्यवस्था, मूल्यांकन प्रणाली के समुचित प्रयोग, ग्रेड प्रदान करने और अभिलेख प्रबंध के बारे में स्वयं को अवगत कराने की आवश्यकता है।

इस पुस्तक के रचना कार्य में साझीदारों– भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड, भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण तथा भारतीय पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण का, उनके बहुमूल्य समय और प्रयासों के लिए हम आभार प्रकट करते हैं।

पुस्तक का प्रस्तुतीकरण निश्चित रूप से सुश्री सुगंध शर्मा, अपर निदेशक (अनुसंधान एवं नवोन्मेष), केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और श्री संदीप सेठी, शिक्षण अधिकारी एवं उनकी टीम के नेतृत्व, निष्कपट ईमानदार प्रयासों तथा सत्यनिष्ठा के बिना कभी संभव नहीं हो पाता। पुस्तक के संबंध में सुझावों का स्वागत है, जिन्हें आगामी संस्करणों में शामिल किया जा सकता है।

अभार

परामर्श समिति

श्री वाई. एस. के. सेषु कुमार, अध्यक्ष, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

सुश्री सुगंध शर्मा, अपर निदेशक (अनुसंधान एवं नवोन्मेष), केंद्रीय माध्यामिक शिक्षा बोर्ड

श्री डी. टी. सुदर्शन राव, संयुक्त सचिव तथा प्रभारी, (शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण), केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केंद्र (एनसीएफई) परामर्श समिति

श्री संदीप घोष, निदेशक, रा. प्रति. बा. सं., प्रा.
श्री जी. पी. गर्ग, रजिस्ट्रार, एनआईएसएम तथा प्रधान, एनसीएफई
श्री ज्ञानभूषण, कार्यपालक निदेशक, सेबी
श्री ए. जी. दास, मु. महा प्रबं., पीएफआरडीए
श्री टी वी राव, महाप्रबंधक, भा रि बैं
सुश्री केजीपीएल रमादेवी, उपनिदेशक, भा. बी. वि. और वि.
डा. मीनू नंदराजोग, प्रोफे., एनसीईआरटी
श्री संदीप सेठी, शिक्षा अधिकारी, सीबीएसई
सुश्री पूनम सोढ़ी, उप सचिव, सीआईएससीई

निगरानी और संपादन बोर्ड

सुश्री शर्मिला रहेजा
डॉ. पारुल पाठक
सुश्री दिशा ग्रोवर
श्री श्रेय रहेजा
सुश्री सरीना पी. यू.
सुश्री रेशू सिंहल
सुश्री सौदमिनी अरविंद
श्री संदीप के बिस्वाल
सुश्री रेनू आनंद

विद्यालयों का दल (सामग्री उत्पादन)

केंब्रिज स्कूल, गाजियाबाद
दिल्ली पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद
दिल्ली पब्लिक स्कूल, इंदिरापुरम, गाजियाबाद
दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा मार्ग, दिल्ली
दिल्ली पब्लिक स्कूल, श्रीनगर
दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसुंधरा, गाजियाबाद
डीएलएफ पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद
गुरुकुल द स्कूल, गाजियाबाद
केसरी देवी बजाज पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद
मॉडर्न स्कूल, बाराखंबा मार्ग, दिल्ली
एन. एच. गोयल वर्ल्ड स्कूल, छत्तीसगढ़
संस्कृत स्कूल, दिल्ली
सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल, गाजियाबाद
शिव नाडर स्कूल, नोयडा
उत्तम बालिका विद्यालय, गाजियाबाद

संकल्पना और रूपरेखा : जितेंद्रकुमार सोलंकी, एनआईएसएम
कविता : तनीशा पुरी, आर एन पोद्दार स्कूल, मुंबई
चित्रांकन : माधव गुप्ता, बाल भारती स्कूल, रोहिणी, दिल्ली
लिखावट : महाराजा सवाई मानसिंह विद्यालय, जयपुर
वर्ग पहेली, उलझे शब्द , एमसीक्यू : रेशू सिंहल, अदनान कोहली, सादिक वजीर
रिया भूयान, दिव्या अग्रवाल, वेणी गुप्ता
मयंक पुगालिया, सात्विक भट्ट, अमन सुराना
संकेत शर्मा और यथार्थ श्रीधरन

विषय–सूची

विषय	प्रसंग	पृष्ठ संख्या
इतिहास 1	वस्तु–विनिमय प्रणाली	
इतिहास 2	धन का विकास	
नागरिक शास्त्र 1	आवश्यकताएं और अपेक्षाएं	
नागरिक शास्त्र 2	बिल / नकद–रसीद	
भूगोल 1	व्यापार	
भूगोल 2	व्यापार के लाभ	
अंग्रजी 1	राधा और वह मेंढक	
अंग्रेजी 2	दादाजी के सिक्के	
गणित 1	कराधान	
गणित 2	धन के पौधे का पोषण	

हैलो दोस्तो, मेरा नाम है वह, जिसके बिना आज की दुनिया के लोग अधिकाँश कार्य नहीं कर सकते हैं। पुराने जमाने में हालांकि मेरे बिना ही व्यापार होता था पर राजाओं और सरकार के आने के समय से मुझे विभिन्न नाम, आकार और स्वरूप मिले। आज मेरे बिना, व्यापार नहीं हो सकता है। मैं सामान्यतः प्रत्येक देश के लिए अलग–अलग हूँ परंतु कुछ देशों में, मैं एक जैसी हूँ। मुझे मुद्रा नाम से पुकारा जाए तो मुझे खुशी होगी, जिसका अर्थ है करेंसी।

हैलो... आजकल हर कोई निवेश करना और उससे आय प्राप्त करना चाहता है पर सभी निवेश सुरक्षित नहीं हैं । मैं सही निवेशों का चयन करने में आपकी मदद करूंगा और आप निःसंकोच रूप से मुझे सुरक्षित या सेफ कह सकते हैं।

हैलो, मैं वह हूँ जिसकी हर किसी को निवेश से अपेक्षा या चाहत होती है पर आप यह समझ लीजिए कि मैं मिलूँगा तभी जब मेरे साथ मेरा दोस्त सेफ होगा। मैं आप को खुश रखता हूँ और आपके सपनों को साकारकता हूँ। आप मुझे मुनाफ .... कह सकते हैं यह मुनाफा का संक्षिप्त नाम है, जिसका अर्थ लाभ या प्रॉफिट है ।

कहानियों, खेलों, शब्द –पहेलियों और शब्दों के घाल–मेल के माध्यम से हम आपको वस्तु –विनिमय, राजाओं और राजशाही के इतिहास की ओर ले जाकर आज की नकदी–रसीद, बिल और व्यापार की ओर आ रहे हैं। मैं जल्दबाजी नहीं करूँगी पर मेरा नाम राशि है। मैं आपको पढ़ाऊँगी कि बचत क्यों और कैसे करें।

वस्तु विनिमय

व्यापार

बजट

बिल

कराधान

दूर देश का इशारा

भूत काल में दूर देश और कृपा–भूमि में धन की खोज हुई थी,
पहले चीजों–सेवाओं की अदल–बदल थी, रुपया, डॉलर जैसी
चीज नहीं थी।
वस्तु–विनिमय नाम था इसका, पद्धति आई थी कुछ काम,
पर काफी समय तक चलते–चलते हो गई फिर बेकाम।

धातुओं की खोज हुई फिर हमने सिक्के ढाले,
देश–देश के अपने सिक्के, सबके रूप निराले।
भारत में है आरबीआई करता धन का मुद्रण,
होता क्या पूछो पापा से, यह व्यापार संतुलन।

भोजन, कपड़े, हवा नहीं हो, जीवन हो जाए मुश्किल,
जीवन की ये चीज जरूरी आवश्यकता इनका नाम।
इंगलिश में ये नीड हमारी, चीज जरूरी,
टॉय–खिलोंने प्यारे सारे जो हैं मेरी मांग।

बिल रखता है लेखा–जोखा लेन–देन का भाया,
टॉय आयतित, याद करो तुम गिरि–बाजार से लाया।
ठंड बहुत और बर्फ का आलम ये आएं पर्वत पार से,
एक पड़ोसी देश हमारा चाइना के व्यापार से।

बचत करूँ यदि पिगी बैंक में धन हो जाए एक विशाल
स्वप्न सभी पूरे हो जाएं दादाजी का सही खयाल।
कैंडी चाहे चॉकलेट हो, बब्बलगम या बॉल बड़ी,
अचरज मुझको, टैक्स चुका कर महंगी, माँ को शॉल पड़ी।

वस्तु–विनिमय, कर की बातें, लेन–देन से मूल्यों तक,
वित्तीय प्रबंधन विषय है, करता निपुण प्रबंधन निधियों का।
पता है तुमको तो बतला दो अर्थ हमें भी रिफण्ड का।

परिभाषा से कार्यों तक इस विषय के कई मुकाम,
मूल बात कुछ सीखेंगे हम वित्तीय प्रबंधन में इस साल।
मनन करेंगे, ध्यान भी देंगे और पढ़ेंगे,
तो कर लेंगे सभी मुश्किलें अपनी पार।

विषय : इतिहास
कक्षा : छह
सत्र : 1

वस्तु–विनिमय प्रणाली

प्राचीन काल में एक बहुत समृद्धिशाली राज्यत था। इस राज्य के लोग बहुत मेहनती थे और वे विभिन्न उत्पादक गतिविधियों में संलग्न थे। उनमें से कुछ किसान, बुनकर, दर्जी, मोची आदि थे। यद्यपि प्रत्येक वस्तु का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होता था पर हर व्यक्ति अपने उपयोग के लिए आवश्यक प्रत्येक वस्तु का उत्पादन नहीं कर सकता था। राज्य में लोग एक प्रणाली अर्थात् व्यवस्था का प्रयोग करते थे, जिसके द्वारा एक व्यक्ति स्वयं की उत्पन्न की हुई वस्तुओं और सेवाओं को किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं से बदल लेता था। इस प्रकार यदि किसी किसान को कमीज सिलवाने की आवश्यकता होती थी तो वह दर्जी को अनाज दे सकता था और यदि मोची को कपड़े की जरूरत होती थी तो बुनकर को अपने बनाए हुए जूते देता था। एक व्यक्ति द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की, दूसरे व्यक्ति की वस्तुओं और सेवाओं से यह अदला–बदली वस्तु–विनिमय प्रणाली कहलाती है। परंतु इस पद्धति में लोगों को अनेक कठिनाइयाँ होती थीं। किसान को कभी जूतों की जरूरत होती थी पर मोची अनाज के लिए अपने जूते बदलने के लिए तैयार नहीं होता था क्यों कि उसके पास अनाज पर्याप्त मात्रा में था और उसे कपड़ों की आवश्यकता रहती थी, जो किसान उसे दे नहीं सकता है। बुनकर अपने कपड़े, जूतों के बदले में नही दे सकता था क्योंकि उस समय उसे बाल कटवाने की जरूरत थी। साथ ही हम सभी जानतें हैं कि कुछ वस्तुएं शीघ्र नष्ट होने वाली हैं और ज्यादा समय तक गोदाम में नहीं रखी जा सकतीं हैं। यदि आपके पास बहुत सारे सेब या संतरे हैं तो आप बाद में विनिमय के लिए उन्हें गोदाम में नहीं रख सकते हैं। लोग अपनी वस्तुओं और सेवाओं को तब तक नहीं बदलेंगे जब तक कि उनको ऐसा आदमी नहीं मिल जाता, जो इन चीजों को ऐसी वस्तुओं से बदलने के लिए तैयार हो, जिनकी उन्हें आवश्यकता है। विनिमय प्रणाली वस्तुतः दोहरे संयोग के सिद्धांत पर काम करती है। एक ही समय पर दो संयोग होने आवश्यक हैं। पहला संयोग यह है कि आप किसी ऐसे व्यक्ति का पता लगाएं जो वह वस्तु बेचने का इच्छुक हो, जो आप खरीदना चाहते हैं। दूसरा संयोग यह है कि वह विक्रेता वह वस्तु खरीदना चाहता हो, जो आप बेचना चाहते हैं।

अभ्यास

1) वस्तु–विनिमय प्रणाली क्या है?

_____

2) वस्तु–विनिमय प्रणाली में यदि किसी व्यक्ति को कुछ वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता है तो वह क्या करेगा?

_____

3) वस्तु–विनिमय प्रणाली के क्या लाभ हैं ?

_____

बताइए इनमें क्या सच है और क्या झूठ :

1) वस्तु–विनिमय प्रणाली में वस्तुओं की खरीद के लिए धन का प्रयोग होता था।
2) वस्तु–विनिमय प्रणाली में बड़ी वस्तुओं की अदला–बदली में कठिनाइयाँ थी।
3) वस्तु–विनिमय प्रणाली में लोग विभिन्न वस्तुओं का विनिमय (अदला–बदली) करते थे।
4) विनिमय प्रणाली वस्तुतः दोहरे संयोग के सिद्धांत पर काम करता है ।

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
निविमय स्तुचव णाप्रली	धन के बिना चीजें और सेवाएं लेना देना	
यविमनि	आदान–प्रदान	
तुस्वि एंसेवा रऔ	उदाहरणः डबल–रोटी और कपड़ा–सिलवाना	
पण्यर ग्रीमसा	आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए उत्पादित बेचने योग्य सामान	

1) वस्तुओं का आदान–प्रदान कहलाता हैः
   क) विनिमय ख) वस्तुय–विनिमय
   ग) विक्रय घ) विपणन

2) धन के बिना चीजों और सेवाओं के आदान–प्रदान को कहते हैंः
   क) विक्रय ख) विनिमय
   ग) वस्तु–विनिमय प्रणाली घ) विपणन

3) आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए उत्पादन किया गया सामान
   क) सेवाएं ख) वस्तुएं
   ग) पण्यर–सामग्री घ) उत्पाद

4) ऐसी प्रणाली, जिसमें एक व्यक्ति, वस्तुओं और सेवाओं का दूसरे व्यक्ति से उसकी वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय करता है, इस नाम से जानी जाती हैः
   क) वस्तु–विनिमय ख) गाड़ीवान
   ग) कसैला घ) विनिमय

5) विनिमय प्रणाली इस सिद्धांत पर काम करती हैः
   क) एकल संयोग ख) दोहरे संयोग
   ग) एकल घटना घ) दोहरी घटना

6) वस्तु–विनिमय प्रणाली में सामान्यतः क्या विनिमय होता थाः
   क) वस्तुएं ख) सेवाएं
   ग) व्यापार की वस्तु घ) उपर्युक्त सभी

विषय : इतिहास
कक्षा : छह
सत्र : 2

क्रम का विकास

आज हम जिस धन को जानते हैं वह एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम है। प्रारंभ में धन जैसी कोई चीज नहीं थी। लोग वस्तु–विनिमय में लीन थे। उस समय धन रहित अर्थव्यवस्था थी। वस्तु–विनिमय प्रणाली में अनेक समस्याएं थीं।

किसी एक सामग्री के किसी दूसरी सामग्री से प्रत्यक्ष विनिमय के लिए दोनों पक्षों के एक साथ संतुष्ट होने की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ कोई व्यक्ति अपनी गाय को दो बकरियों से विनिमय करना चाहता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि गाय वाला व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़े, जो अपनी दो बकरियों को उस गाय से बदलना चाहता हो। सभी वस्तुएं, जिनका विनिमय किया जाना है, समान मूल्य की नहीं होती हैं इसलिए अलग–अलग वस्तुओं के मध्य, विनिमय का अनुपात निश्चित करना बहुत मुश्किल है। उन चीजों को लीजिए जो अदृश्य– हैं, उनका या जो आकार में छोटी हैं, उनका भी मूल्य होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई गाय का मालिक एक मुर्गी खरीदना चाहता है तो उसके लिए यह संभव नहीं होगा कि वह गाय का एक छोटा हिस्सा काट कर मुर्गी के मालिक को दे दे। वस्तुओं को विशेषकर मछली जैसी शीघ्र नष्ट होने वाली चीजों को गोदाम में एकत्र करना भी बहुत कठिन है।

इस प्रकार वस्तु–विनिमय कठिनाइयों से मुक्त नहीं था। इसलिए धन की आवश्यकता सामने आई। धातु की खोज होने के साथ ही उसका धन के रूप में प्रयोग होने लगा। ई. पू. छठी शताब्दी में पहली बार सिक्कों का उदय हुआ, ये सिक्के आजकल के सिक्कों से मिलते–जुलते थे। वे एक निश्चित भार और मूल्य के धातु के छोटे टुकड़े हुआ करते थे और उन पर शासकीय मुहर लगी होती थी, जो उस सरकार की पहचान एवं उनके मूल्य की गारंटी होती थी, जिसने उनको ढलवाया था। पहली धातुएं, जो सिक्कों के लिए प्रयोग की गईं, वे सोना और चाँदी थीं। मौर्य शासन–काल में चाँदी, सोने और ताँबे के सिक्को का चलन रहा था। राजा शेर शाह सूरी ने भी 178 ग्रेन भार का एक चाँदी का सिक्का जारी किया था, जिसे "रुपिया" नाम दिया गया था। हिंदी के शब्द रुपिया की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द "रुप्या" से हुई है, जिसका अर्थ "चाँदी का सिक्का" है। चाँदी का सिक्का मुगल काल में, मराठा युग और ब्रिटिश भारत तक चलन में रहा। कागज से बने रुपया के सबसे पहले संस्करणों में बैंक ऑफ हिंदुस्तान (1770–1832) द्वारा जारी किया गया रुपया था। वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता और राजसी राज्यों के नवगठित भारतीय संघ में शामिल कर लिए जाने के बाद, पहले के स्वततंत्र राज्यों की सभी मुद्राओं का स्थान भारतीय रुपया ने ले लिया। अपने गठन के पश्चात् भारतीय रिजर्व बैंक, भारत सरकार की ओर से नोट और सिक्के जारी करता है। यह जानना बड़ा रुचिकर है कि भारत के विभाजन के साथ, प्रारंभ में भारतीय सिक्कों और भारतीय नोटों का उपयोग करते हुए पाकिस्तानी रुपया अस्तित्व में आया। भारतीय करेंसी–नोटों के

ऊपर बस ''पाकिस्तान'' मुहर लगा दी जाती थी।

अभ्यास

1) भारत में पहला कागज का रुपया किसने जारी किया था————————————————————

2) भारत सरकार की ओर से नोट और सिक्केस कौंन जारी करता है————————————————————

निम्नलिखित में सही जोड़ी मिलाकर लिखिए:

मुद्रा (करेंसी)	देश	प्रतीक चिह्न
रुपया	चीन	£
येन	यूरोप	¥
डॉलर	यूनाइटेड किंगडम	$
युआन	भारत	£
पाउंड स्टर्लिंग	संयुक्त राज्य अमेरिका	¥
यूरो	जापान	₹

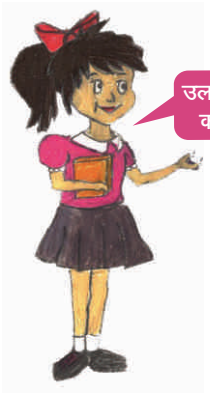

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
प्रक्षत्य	विनिमय का एक प्रकार	
रशे हाश रीसू	धातु के सिक्के चालू किए	

1) मैंने पाउंड का इस्तेमाल करके जूते खरीदे हैं। बताइए मैं किस देश में हूँ?

क. जापान ख. संयुक्त राज्य अमेरिका
ग. भारत घ. यूनाइटेड किंगडम

2) मैं जापान जा रहा हूँ। मैं वहाँ कौन–सी मुद्रा (करेंसी) का प्रयोग करूँगा?

क. येन ख. रुपया
ग. डॉलर घ. यूरो

3) मैं हाल ही में एफल टावर देखने गया था। वहाँ स्थल–दर्शन के समय कौन–सी मुद्रा खर्च की?

क. डॉलर ख. युआन
ग. यूरो घ. रुपया

4) मेरी माँ मेरे लिए 45 डॉलर में जूतों का एक जोड़ा खरीद कर आईं। वह कौन से देश गईं थीं?

क. जापान ख. चीन
ग. फ्रांस घ. संयुक्त राज्य अमेरिका

5) हिंदी शब्द रुपिया की संस्कृत शब्द..... से उत्पत्ति हुई है। सही शब्द पर सही (टिक) का निशान लगाइए।

क. रुपया ख. रुपिया
ग. रुप्याड घ. रूपे

6) भारत सरकार की ओर से सिक्के और नोट जारी किए जाते हैं।

क. आरबीआई ख. आरपीआई
ग. एसबीआई घ. एसपीआई

7) कौन सी खोज से विनिमय के माध्यम, धन का सूत्रपात करने में मदद मिली ?

क) रसायन　　ख) आग
ग) गढ़ने की तकनीक　　घ) धातु

8) पहली बार सिक्कों का कब प्रारंभ हुआ था ?

क) 5वीं शताब्दी बी.सी.　　ख) छठी शताब्दी बी.सी.
ग) 7वीं शताब्दी बी.सी.　　घ) 8वीं शताब्दी बी.सी.

9) पहली बार सिक्के किस धातु के बने थे ?

क) सोना और चाँदी　　ख) चाँदी और ताँबा
ग) ताँबा और सोना　　घ) चाँदी, सोना और ताँबा

10) ''रुपिया'' नामक चाँदी का सिक्का किसने लागू किया था ?

क) औरंगजेब　　ख) बाबर
ग) शाहजहाँ　　घ) शेरशाह सूरी

11) वर्ष 1770–1832 के बीच रुपया किसने जारी किया था ?

क) बैंक ऑफ इंडिया　　ख) ब्रिटिश सरकार
ग) बैंक ऑफ हिंदुस्तान　　घ) बैंक ऑफ भारत

12) वर्तमान काल में नोट और सिक्के द्वारा जारी किए जाते हैं।

क) भारतीय स्टेट बैंक　　ख) भारतीय रिजर्व बैंक
ग) राज्य सरकारें　　घ) बैंक ऑफ इंडिया

अब हम जानते हैं कि मुद्रा या धन कैसे अस्तित्व में आया ।

विषय : नागरिक शास्त्र
कक्षा : छह
सत्र : 1

अवश्यकताएँ और अपेक्षाएं

आवश्यकता या अंग्रेजी भाषा में 'नीड' वह कोई वस्तु या चीज है, जो आपके पास होनी ही चाहिए, वह कोई वस्तु जिसके बिना आप रह नहीं सकते हैं। मूलभूत आवश्यकताओं में खाना, पानी और आश्रय शामिल हैं। हमारे जीवन में भिन्न–भिन्न समयों पर हमारी आवश्यकताएं भिन्न हो सकती हैं। मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा हमारे पास अन्य चीजें होती हैं, जिन्हें हम प्रयोग करते हैं और खरीदते हैं। ये ''अतिरिक्त'' चीजें हमारे जीवन को अधिक मजेदार एवं आरामदायक बनाती हैं। अक्सर ये ऐसी चीजें हैं, जिन्हें आप प्राप्त करना पसंद करते हैं पर इनके बिना आप रह सकते हैं। ये चीजें या मद अपेक्षा कहलाती हैं। अपेक्षाओं के कुछ उदाहरण बाहर भोजन करना, सिनेमा जाना, प्ले –स्टेशन खरीदना आदि हैं।

ऐसा भी है कि एक व्यक्ति की अपेक्षाएं दूसरे की आवश्यकताएं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, दोस्तों के साथ खेलने के लिए क्रिकेट बॉल खरीदना आवश्यकता हो सकती है। परंतु यदि मँहगी बॉल खरीदना एक अपेक्षा हो जाएगी। इसके साथ ही यदि आप स्कूल की क्रिकेट टीम के लिए खेल रहे हों तो मँहगा, अच्छी गुणवत्ता का बैट खरीदना ''आवश्यकता'' है।

कोई चीज खरीदने से पहले आप स्वयं से पूछें, ''क्या इस चीज की मुझे ''आवश्यकता'' है या केवल मेरी ''अपेक्षा''। आपको आश्चर्य होगा कि वास्तव में केवल थोड़ी सी वस्तु ही ''आवश्यकताएं'' हैं।

अभ्यास

नीचे की तालिका में अपनी कुछ आवश्यकताओं की सूची बनाइए। उन आवश्यकताओं को सोचने की कोशिश करें जो तत्काल हों और जिनकी जरूरत आपको अगले कुछ महीनों में होगी। तब कुछ अपेक्षाओं को लिखिए। क्या आप कुछ अंतर अनुभव कर रहे हैं।

आवश्यकताएं		अपेक्षाएं	

1) क्या कुछ ''आवश्यकताएं'' वस्तुतः ''अपेक्षाएं'' हैं? उन अपेक्षाओं पर क्रॉस का निशान लगाइए, जो आपके लिए सबसे कम महत्त्व की हैं।

बजट बनाना

सुमित को अपने जन्म –दिन की भेंट के रूप में रु.500/– मिले। नीचे कुछ ऐसी मद हैं, जिनमें वह इस धन को खर्च कर सकता था। वह इसमें से रु.50/– बचाना चाहता है ताकि वह अपने पिता के जन्म–दिन पर उन्हेंक एक पेन भेंट कर सके। यदि आप सुमित होते तो यह दिखलाते हुए कि आप इस धन का कैसे उपयोग करेंगे, एक बजट बनाइए। आप इस धन को कैसे प्रयोग करेंगे ताकि आप अपनी जरूरतें पूरी कर सकें और अपने पिता को दी जाने वाली भेंट के लिए धन बचा सकें। आप जितनी मदें चाहे प्रयोग कर सकते हैं परंत कुल राशि रु.500/– से अधिक नहीं होनी चाहिए।

मूल्य सूची	
मद	मूल्य
म्यूजिक सीडी	₹ 20
कंप्यूटर गेम	₹ 75
पीजा	₹ 75
कॉमिक पुस्तक	₹ 30
सिनेमा टिकट	₹ 40
बार्बी डॉल	₹ 75
वीडियो सीडी	₹ 30
आइस क्रीम	₹ 25
क्रिकेट बैट	₹ 100
क्रिकेट बॉल	₹ 50
भविष्य के लिए बचत	कोई राशि
जरूरतमंद को देना	कोई राशि

मेरा बजट	
मद	मूल्य
	जोड़ :

अभ्यास

1) अपनी आवश्यकतओं और अपेक्षाओं के दो–दो उदाहरण दीजिए:

2) आवश्यकतओं और अपेक्षाओं में क्या अंतर है ?

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
श्वकआयता	जीवित रहने लिए जरूरी मूलभूत वस्तुएं	
क्षाअएंपे	वे वस्तुएं जो जीवन को मजेदार और आरामदायक बनाती हैं	

1) जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं हैं:

क) मांगें ख) अपेक्षाएं
ग) वस्तुएं घ) आवश्यकताएं

2) वे वस्तुएं जो हमारे जीवन को मजेदार और आरामदायक बनाती हैं:

क) मांगें ख) अपेक्षाएं
ग) वस्तुएं घ) आवश्यकताएं

3) खाना, कपड़े और आवास हैं

क) मांगें ख) अपेक्षाएं
ग) वस्तुएं घ) आवश्यकताएं

4) किसी बड़े व्यक्ति के लिए निम्नलिखित में से कौन सी चीजें आवश्यक नहीं होगीं?

क) अस्पताल को जाना ख) गर्म कपड़े
ग) टहलने की छड़ी घ) आस्ट्रेलिया भ्रमण

5) उस मद को पहचानिए, जिसकी एक विद्यार्थी को आवश्यकता होगी:

क) मोबाइल ख) कंप्यूटर
ग) सोसल साइट देखने के लिए इंटरनेट घ) मोटर बाइक

विषय : नागरिक शास्त्र
कक्षा : छह
सत्र : 2

अब मैं आपको बिल के संबंध में जानकारी दूँगा

बिल/नकद–रसीद

बिल क्या है ?

विक्रय बिल 'विक्रेता' द्वारा 'क्रेता' को प्रदान किया गया कानूनी दस्तावेज है, जिसमें दोनों पक्षों के बीच ले–देन का अभिलेख होता है। इसमें महत्वपूर्ण संपर्क सूचना, मद का ब्योरा और मूल्य, भुगतान विधि, वारंटी और हस्ताक्षर होते हैं। कानूनी दस्तावेज के रूप में यह क्रेता एवं विक्रेता दोनों पक्षों के लिए सुरक्षा और फायदे प्रदान करता है।

हमें बिल प्राप्त करने का क्यों आग्रह करना चाहिए ?

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम प्रत्येक खरीद या किए गए भुगतान के लिए सदैव बिल या रसीद की मांग करें। बिल या रसीद के अभाव में वस्तुएं के दोषपूर्ण होने या स्तरीय न होने की स्थिति में क्रेता को कानून के अंतर्गत शिकायत करने का अधिकार नहीं रहता है।

अभ्यास

रिक्त स्थान भरिए :

1) विक्रय बिल 'विक्रेता' द्वारा 'क्रेता' को प्रदान किया गया..... दस्तावेज है।

2) बिल में दोनों पक्षों के बीच ले–देन का .....होता है।

3) क्रेता एवं विक्रेता दोनों पक्षों के लिए ..... और ..... प्रदान करता है।

उलझे–पुलझे शब्दो

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
लवि	विक्रेता द्वारा क्रेता को प्रदान किया गया दोनों पक्षों के बीच लेन–देन के अभिलेख का कानूनी दस्तावेज	
दनक सीरद	नकदी देकर की गई खरीद की पर्ची	

1) कोई ऐसे पाँच स्थान / विक्रेता पहचानिए, जो बिल जारी करते हैं:

क) फुटपाथ का सब्जी विक्रेता
ख) पास की किराने की दुकान
ग) स्कूल की कैंटीन
घ) सिनेमा हॉल
ङ) पुस्तक की दुकान
च) बस / ट्रेन
छ) ऑटो रिक्शा
ज) हेयर कटिंग सलून

2) किसी बिल का अध्ययन कीजिए और उसमें निम्नलिखित विवरण ढूंढ़िए:

क) खरीद / बिक्री की तारीख
ख) खरीदी / बिक्री की गई इकाइयों की संख्या
ग) प्रति इकाई मूल्य
घ) यदि कोई मिली हो तो छूट
ङ) लगाए गए कर
च) बिल की कुल राशि
छ) ग्राहक सुविधा का विवरण

3) बिल नहीं प्राप्त होने पर क्रेता कौन–सा अधिकार खो देता है ?

क) खरीद का अधिकार
ख) शिकायत का अधिकार
ग) वस्तु बदलकर प्राप्त करने का अधिकार
घ) चयन करने का अधिकार

अब आप जानते हैं कि प्रत्येक खरीद के बाद बिल प्राप्त करना इतना जरूरी क्यों है ।

विषय : भूगोल
कक्षा : छह
सत्र : 1

याद कीजिए काबुलीवाला वह व्यापार किया करता था?

व्यापार

व्यापार क्या है ?

जब कोई व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं का स्वामित्व, विनिमय में कोई अन्य वस्तु या सेवा प्राप्त करके किसी दूसरे व्यक्ति को अंतरित कर देता है तो यह व्यापार कहलाता है। मोटे तौर पर दो प्रकार के व्यापार होते हैं: घरेलू या स्वदेशी व्यापार और विदेश व्यापार।

घरेलू या स्वदेशी व्यापार का अर्थ सभी प्रकार की उस व्यापारिक गतिविधि से है, जो किसी देश की भौगोलिक सीमा के अंदर होती है। उदाहरणार्थ किसी दुकानदार का मुंबई से कपड़े खरीद कर दिल्ली में बेचना। दूसरी ओर विदेश व्यापार दो या अधिक देशों के बीच होता है। विदेश व्यापार का एक उदाहरण भारत का पाकिस्तान से चीनी खरीदना है।

अभ्यास

1) आप अपने इलाके के बाजार या दुकान में घूमे हैं। वहाँ से खरीदी हुई किन्हीं पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए। क्या वह दुकानदार उन वस्तुओं को केवल बेचता है या उनका उत्पादन भी करता है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) नीचे कतिपय उत्पादों के लिए मशहूर विभिन्न स्थानों के नाम दिए हुए हैं। आप उन उत्पादों के नाम लिखिए।

क) कश्मीर..... ख) नागपुर..... ग) जयपुर.....

घ) बनारस..... ङ) दार्जिलिंग..... च) हैदराबाद.....

छ) पन्नाक..... ज) शिमला.....

3) दैनिक जरूरत की किन्ही पाँच वस्तुओं की सूची बनाइए और यह भी उल्लेख कीजिए कि आप उन्हें कहाँ से प्राप्त करते हैं।

....

....

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1) किसी एक व्यक्ति द्वारा वस्तुओं और ..... का स्वामित्व किसी दूसरे व्यक्ति को ..... कर देना व्यापार कहलाता है।

2) दो प्रकार के व्यापार ..... और ..... व्यापार हैं।

3) घरेलू व्यापार किसी देश की ..... के अंदर की व्यापार गतिविधि है।

4) विदेश व्यापार ..... देशों के बीच होता है।

5) कुमार ने कोट्टायम, केरल में अपने फार्म में मसालों का उत्पादन किया। उसने चंडीगढ़, पंजाब में एक व्यावसायी को अपने मसाले बेचने का निर्णय लिया। इस प्रकार का व्यापार ..... व्यापार कहलाएगा।

6) विक्रांत कश्मीर में हस्त–निर्मित कालीन बनाता है। उसने अपनी कालीनों के लिए तुर्की से कुछ सामान खरीदा। इस प्रकार की खरीद ..... कहलाती है।

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
शविदे राव्या	देश की सीमा के बाहर व्यापार	
रेघलू व्रयापा	देश की भौगोलिक सीमा के अंदर व्यापार	
ड्रेट	वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय	

1) किसी देश की भौगोलिक सीमा के अंदर होने वाली सभी प्रकार की व्यापारिक गतिविधि.....है:

क) व्यापार ख) घरेलू व्यापार
ग) विदेश व्यापार घ) राज्य व्यापार

2) दो या अधिक देशों के बीच होने वाला व्यापार होता है:

क) व्यापार ख) घरेलू व्यापार
ग) विदेश व्यापार घ) राज्य व्यापार

व्यापार के लाभ

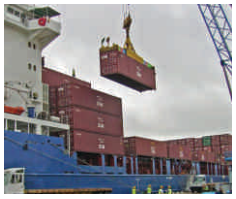

यदि कोई देश दूसरे देश की तुलना में कम कीमत पर वस्तुओं का उत्पादन करता है तो वहाँ व्यापार का अवसर होता है। इसके अलावा तब भी व्यापार का सुयोग होता है जब कोई देश उन वस्तुओं का उत्पादन कर सकता हो, जिनका उत्पादन दूसरा देश नहीं कर सकता हो। इनमें से प्रत्येक मामले में, उपभोक्ता और उत्पादनकर्ता दोनों ही देशों में व्यापार न होने की स्थिति की तुलना में, व्यापार करने में ही फायदा रहेगा।

इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण देखिए। मान लें कि सनी एक टापू पर रहता है, जहाँ नारियल का एक पेड़ है। बॉबी एक दूसरे टापू पर रहता है, जहाँ केले का एक पेड़ है। सनी नारियल खा–खा कर थक गया है और कुछ नया खाना चाहता है। आश्चर्य की बात है कि बॉबी भी केला खाते–खाते थक गया है और कुछ अच्छा मीठा नारियल खाना चाहता है। इन उदाहरण में व्यापार से दोनों को फायदा होगा।

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
त्मर्धास्पक अकूलनु स्थिति	अन्य उत्पादकों की तुलना में कम कीमत पर वस्तुओं का उत्पादन करना	
र्णपू लअनुकू स्थिति	समान संसाधनों वाले अन्य उत्पादकों से अधिक वस्तुओं का उत्पादन करना	

1) शीतल एक कमीज का उत्पादन रु.100/– में करता है, जबकि अनुज एक कमीज रु. 150/– में तैयार करता है।
इसका अर्थ है कि शीतल की .....अनुकूल स्थिति है।

क) तुलनात्मक ख) पूर्ण
ग) स्पर्धात्मक घ) सापेक्ष

2) रु.150/– का उपयोग कर अनुज 15 चॉकलेट बना सकता है, जबकि शीतल रु.150/– से 10 चॉकलेट बनाता है।
इसका अर्थ है कि अनुज के पास.....लाभ की स्थिति है।

क) तुलनात्मक ख) पूर्ण
ग) स्पर्धात्मक घ) सापेक्ष

विषय : भुगोल
कक्षा : छह
सत्र : 1

कथा समय

राधा और वह मेंढक

एक बार दूर बहुत दूर एक छोटी लड़की रहती थी, जिसका नाम राधा था। वह प्रत्येक दूसरी लड़की की तरह ही थी। वह स्कूल जाती, दोस्तों के साथ घूमती और एक राजकुमारी बनने के सपने देखती थी।

वह राजकुमारी बनना चाहती थी परंतु वह इस बहाने घर पर अपने माता–पिता की मदद करने से कभी नहीं चूकती थी। इस प्रकार वह हर दिन अपने सब काम करती थी और इसके बदले में उसके पिता सप्ताह के अंत में जेब–खर्च देते थे। परंतु केवल नौ साल की होने के कारण उसने इसमें से कभी कुछ बचाया नहीं और बहुत सारी खूबसूरत गुड़िया और चॉकलेट खरीदी।

परंतु एक दिन उसके प्रसन्नता और बेफिक्री के दिनों का अंत हो गया। राधा के पिता का निधन हो गया। वह और उसकी माँ बहुत दुखी थीं ओर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। हर महीने वे राधा की स्कूल फीस, घर के किराये, बिजली, पानी के बिल और अपनी जरूरत की दूसरी चीजों के लिए पर्याप्त धन कमाने के लिए साथ–साथ संघर्ष करतीं थीं।

राधा को अपनी वह प्रसन्नता और बेफिक्री की जिंदगी याद आती थी। अब उसका बहुत कठोर जीवन था। वह सदैव भूखी रहती थी और उसके कपड़े अब उपयुक्त नहीं रह गए थे। परंतु जैसे–जैसे दिन बीत रहे थे वह अपनी माँ को और अधिक थकी और चिंतित होते हुए देख रही थी, उसने स्वयं से एक वायदा किया। ''जब मैं बड़ी हूँगी तो मैं यह सुनिश्चित करूँगी कि मेरे पास पर्याप्त धन हो ताकि हमें फिर कभी पैसे की चिंता नहीं करनी पड़े,'' उसने प्रतिज्ञा की। ''मैं अपनी माँ का पूरा ध्यान रखूँगी और हमारे पास खाने के लिए पर्याप्त खाना होगा।'' परंतु एक ही समस्या थी कि यह कैसे शुरू किया जाए। यद्यपि उसके माता–पिता उससे बहुत प्यार करते थे परंतु उन्होने उसे धन के महत्व के बारे में और उसकी बचत करना कितना जरूरी है यह कभी नहीं बताया।

एक दिन वह अपने मकान के पास तालाब के किनारे बैठी थी और धनवान राजकुमारी बनने का सपना देख रही थी तभी अचानक एक मेंढक उसके पास आ गया। मेंढक ने कहा ''हैलो, राधा, मेरा नाम चंपकलाल है। बहुत पहले जब मैं आदमी था तब मैं एक बुरा साहूकार था और गरीब लोगों से पैसा ऐंठ कर मैं

धनवान बन गया था। दंडस्वरूप भगवान ने मुझे मेंढक के रूप में कुछ समय बिताने के लिए कहा है और बोला है कि मैं तुम्हें फिर से आदमी बनाऊँ उससे पहले तुम एक व्यक्ति को निपुण (स्मार्ट) धन प्रबंधन का पाठ सिखाओ। परंतु हर कोई मुझसे दूर भागता है।''

राधा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पर उसने सोचा कि शायद वह उससे धन की बचत करना सीख सकती है ताकि उसे और उसकी माँ को फिर कभी भी धन की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। तब उसने मेंढक को बताना शुरू किया कि कैसे उसके पिता की मृत्यु हो गई और फिर कैसे अब उसकी माँ और उसके जीने के लिए पैसा नहीं रहा था।

चंपकलाल ने राधा को बताया, ''पहले तुम्हें अपना बजट बनाना होगा''। ''इसका मतलब यह है कि तुम्हें वह हर चीज और उसकी कीमत लिखनी होगी, जिसके लिए हर महीने तुम्हें खर्च करना पड़ता है। फिर तुम्हें यह मालूम करना पड़ेगा कि अब तुम्हारे पास कितना धन है और उसमें से कितनी बचत कर सकती हो। संभावना है कि शुरू–शुरू में यह राशि ज्यादा नहीं होगी परंतु प्रत्येक छोटी राशि का बड़ा महत्व है। जब तुम बड़ी हो जाओगी तब तुम अपना पूरा पैसा लेकर उससे एक मकान खरीद सकती हो और अपने कॉलेज की फीस दे सकती हो। इसमें से कुछ धन तुम अपने पास रख सकती हो और उसे उस समय प्रयोग कर सकती हो जब तुम इतनी अधिक आयु की हो जाओ कि काम न कर सको। यदि तुम बहुत सा धन कमा सकोगी तो तुम्हें और तुम्हारी माँ को कोई चिंता नहीं होगी।''

और इसके साथ ही चंपकलाल फिर से आदमी के रूप में आना शुरू हो गया क्यों कि राधा ने उससे एक बहुमूल्य पाठ सीख लिया था। आज राधा और उसकी माँ के पास उनके भविष्य के लिए पर्याप्त धन है और अब वे अपना मकान वापस खरीदने के लिए बचत कर रहीं हैं।

अभ्यास

1) राधा के बेफिक्री और प्रसन्नता के दिनों का कैसे अंत हो गया था ?

.....

2) उसके पिता की मृत्यु के बाद राधा को और उसकी माँ को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा था?

.....

3) राधा ने अपने भविष्य के लिए जो वायदा किया था, वह क्या था ?

.....

4) अपना वायदा निभाने में राधा के सामने क्या कठिनाइयाँ आईं ?

.....

5) चंपकलाल कौन था और वह मेंढक कैसे बन गया था ?

.....

6) चंपकलाल ने स्मार्ट धन प्रबंधन (मनी मैनेजमेंट) के बारे में राधा को क्या पाठ पढ़ाया ?

.....

7) इस कथा अर्थात कहानी से क्या सीख मिलती है?

.....

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
टबज	भविष्य में किसी अवधि विशेष के दौरान आय और व्यय का अनुमान	
नध नधबंप्र	धन का प्रबंध करना	

मनोविनोद

1) राधा क्या खरीदने में अपना पैसा खर्च करती थी ....

क) गुड़िया और चॉकलेट   ख) पुस्तकें

ग) बर्तन   घ) पेंसिलें

2) चंपक ने धन प्रबंधन के लिए राधा से ....बनाने के लिए कहा।

क) खर्चों की सूची   ख) साधनों की सूची

ग) बजट   घ) उसकी आवश्यकता की चीजों की सूची

आइए हम स्मार्ट धन प्रबंधन करें

विषय : अंग्रेजी
कक्षा : छह
सत्र : 2

दादाजी के सिक्के

मेधा और उसके चचेरे भाई–बहन हर हफ्ते अपने दादा–दादी के घर बड़े पारिवारिक भोजन के लिए जाते थे। वे सभी उस क्षण का बड़ी उत्सुकता से इंतजार करते थे, जब उनके दादाजी उन सब को अपनी–अपनी पसंद की वस्तु खरीदने के लिए कुछ सिक्के देते थे।

इनमें से अधिकांश बच्चे अपने सिक्के कैंडी और खिलोने खरीदने में खर्च कर देते थे परंतु मेधा, कैंडी और खिलोनों पर खर्च न कर अपने सभी सिक्के बचा लेती थी। दो वर्ष के बाद दादा–दादी के घर पर, मेधा के पास एक वॉयलन देख कर सभी चकित रह गए। जब सब ने इसके बारे में पूछा तो उसने बड़े गर्व से कहा कि यह उसने अपने पैसे से खरीदा है। फिर उसने बताया किया कि कैसे वह उन सभी सिक्कों को बचा लेती थी, जो उसके दादाजी हर हफ्ते देते थे। उसने वॉयलन बजाना भी सीख लिया था। यह सब सुन कर सभी ने मेधा की प्रशंसा की।

कुछ वर्ष बाद जब मेधा एक बहुत मशहूर वॉयलन वादक बन गई तो वह लोगों को सदैव यह बताती थी कि कैसे सुनियोजित ढंग से खर्च किए गए केवल कुछ सिक्कों से यह संभव हो सका।

अभ्यास

आप के विचार से दादाजी के सिक्कों का किसने बेहतर प्रयोग किया था। अपने जबाब के कारण भी बताइए।

खर्च कर्ता/बचत कर्ता	विवेकपूर्ण खर्च	फुजूल खर्च	कारण
मेधा			
मेधा के चचेरे भाई–बहन			

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
केक्सि	धातु धन	
र्चख नारक	बचत का विलोम	

1) बच्चे .....खरीदने में अपना पैसा खर्च करते हैं।

क) पुस्तकें ख) पेंसिल बॉक्स

ग) गुड़िया और चॉकलेट घ) कपड़े और जूते

2) मेधा एक बहुत मशहूर ..... बन गई।

क) पियानो वादक ख) नर्तकी

ग) वॉयलन वादक घ) गायक

मैं अपने जेब–खर्च में से भविष्य की आवश्यकताओं के लिए कुछ धन–राशि की बचत करूँगा।

विषय : गणित
कक्षा : छह
सत्र : 1

कराधान

करों के प्रकार

क्या आप जानते हैं कि हमारे देश में सड़कों, अस्पतालों, पार्कों और सेतुओं आदि का निर्माण कौन करता है ? उत्तर है हमारी सरकार– केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकार। परंतु क्या आपने कभी सोचा है कि इन सब चीजों के बनाने में खर्च करने के लिए सरकारों के पास धन कहाँ से आता है?

आर्थिक विकास के संवर्धन और लोगों के जीवन–स्तर में सुधार लाने के लिए सरकार को विभिन्न कल्याणकारी उपायों पर धन व्यय करना पड़ता है। इन कार्यों का वित्त–पोषण जनता से धन एकत्र करके किया जा सकता है। सरकार अपने खर्च का वित्त–पोषण नागरिकों और निगम हस्तियों (एंटिटी) पर प्रभार लगा कर करती है, जिसे ''कराधान'' कहा जाता है। कराधान से सरकार एक वृहत् राजस्व राशि एकत्र करने में सक्षम हो जाती है। भारत में मुख्यतः दो तरह के कर होते हैं– प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर।

प्रत्यक्ष कर, जैसाकि नाम से प्रकट होता है, वे कर हैं जो करदाता द्वारा सीधे ही सरकार को अदा किए जाते हैं। यह एक ऐसा कर है, जो सरकार द्वारा प्रत्यक्ष रूप में व्यक्तियों और संगठनों पर लगाया जाता है जैसे आय कर और निगम कर आदि।

अप्रत्यक्ष कर वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन पर लगाए जाते हैं। प्रारंभ में इन करों का भुगतान सरकार को एक मध्यस्थ द्वारा किया जाता है, जो बाद में अदा किए गए कर की राशि को वस्तुओं/सेवाओं के मूल्य में जोड़ देता है और फिर कुल राशि अंतिम उपभोक्ता को अंतरित कर दी जाती है।

प्राचीन भारत में कराधान

इस बात के प्रमाण हें कि भारत में प्राचीनकाल से ही आय पर कर लगाए जाते रहे हैं। मौर्य शासनकाल में एक सुसंगठित कर प्रणाली विद्यमान थी, जिसका 'अर्थशास्त्र ' में वर्णन किया गया है। करों और देय–राशियों की, जो शासक और राजस्व की वसूली के लिए उत्तरदायी पदाधिकारियों द्वारा वसूली जाती थीं, एक सूची का भी वर्णन है। इसमें यह भी उल्लेख है कि कर जिंस या

वस्तुओं जैसे– अनाज, पशु, सोना, वन–उत्पाद और अन्य चीजों के रूप में भी वसूल किए जाते थे। मौर्य काल के दौरान भूमि का नियमित रूप से मूल्यांकन होता था और समुचित कर स्तकर का निर्धारण किया जाता था। खनन, वर्स्र उद्योग, काष्ठ्यप तथा विभिन्न शिल्प श्रेणियों पर भी कर लगाए जाते थे। श्रेणी वृहत् संगठन हुआ करते थे, जो किसी उत्पाद विशेष के लिए श्रमिकों को सेवा में रखते थे। राज्य का शुल्काध्यक्ष नामक एक पदाधिकारी व्यापार की वस्तुओं पर कर की वसूली करता था।

देश के महान कानून प्रदाता मनु ने मनुस्मृति में कर नीति के संबंध में यह वर्णन किया है ''जोंक, बछड़ा और मधुमक्खी जिस प्रकार थोड़ा– थोड़ा करके अपना भोजन ग्रहण करते हैं वैसे ही राजा को अपने राज्य से संयत वार्षिक कर लेने चाहिए।''

''यह उसकी प्रजा के भले के लिए ही उनसे कर वसूल करता था, ठीक उसी तरह जैसे सूर्य धरती से नमी अवशोषित करता है और फिर उसे हजार गुना करके वापस कर देता है।'' रघुवंश में राजा दलीप की प्रशंसा करते हुए कालिदास।

अभ्यास

क) वह माध्यम, जिसके द्वारा सरकार अपने खर्च का वित्तपोषण करती है..... कहा जाता है।

ख) ..... कर वह कर है, जिसका भार उस व्यक्ति पर पड़ता है, जिस पर वह लगाया जाता है।

ग) सेवा कर ..... का उदाहरण है।

घ) प्रत्यक्ष कर का एक उदाहरण..... है।

ङ) किसी देश की ..... में करों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक शब्द में उत्तर दीजिए।

क) मौर्य शासन–काल में करों के बारे में सूचना देने वाला साहित्य स्रोत ..... ।

ख) भूत काल में लोगों द्वारा कर अदा किए जाने का स्वरूप ..... ।

ग) प्राचीन काल में इस उद्योग पर कर लगाया जाता था ..... ।

घ) वह संगठन, जो किसी उत्पाद विशेष के लिए श्रमिकों को नियोजित करता था ..... ।

ङ) वह पदाधिकारी, जो मौर्य शासन–काल में कर वसूली का कार्य करता था..... ।

निम्नलिखित का सही जोड़ा बनाइए :

क)	संपत्ति कर	जिंस के रूप में कर
ख)	सेवा कर	प्रत्यक्ष कर
ग)	वन–उत्पाद	अप्रत्यक्ष कर
घ)	मूल्य योगित कर	राज्य पदाधिकारी
ङ)	शुल्काध्यक्ष	वी ए टी
च)	श्रेणी	मौर्य साम्राज्य
छ)	अर्थशास्त्र	बड़े संगठन

उलझे–पुलझे शब्द

उलझे–पुलझे शब्द	संकेत	हल
धाकनरा	सरकार के लिए आय	
र्थिकआ सविका	अर्थव्यवस्था में वृद्धि होती है	
क्रीबि रक	बेचने पर प्रभार	
तयोगि ल्यूम रक	अप्रत्यक्ष रूप से लिए जाने वाले इन करों से वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है	
रक त्तिपसं	धनवान लोगों को देना होगा	
नजीव तस्र	धन और किसी समुदाय को उपलब्ध सुख की माप	
र्खच	खर्च की गई राशि	
क्षत्यप्र रक	किसी व्यक्ति विशेष द्वारा सीधे सरकार को प्रदत्त	
क्षअत्यप्र रक	कर का अंतिम भार वहन करने वाले व्यक्ति से मध्यस्थ द्वारा वसूल किया हुआ कर	
रक यआ	मुझे गर्व है कि मैं यह देता हूँ	

1) ..... करदाता द्वारा सीधे ही अदा किया जाता है।

क) प्रत्यक्ष ख) विक्रय

ग) सेवा घ) मनोरंजन

2) ..... वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री पर लगाया जाता है।

क) अप्रत्यक्ष कर ख) प्रत्यरक्ष कर

ग) आय कर घ) चुंगी कर

विषय : गणित
कक्षा : छह
सत्र : 2

धन के पौधे का पोषण

जेब खर्च

सनी और बॉबी जब 10 साल के थे तो उन्होंने यह निश्चय किया कि वे अपने जेब खर्च का पूरा पैसा खर्च नहीं करेंगे बल्कि हर महीने अपनी माँ के पास रख कर बचाएंगे। पाँच महीने बाद बॉबी ने पैसा बचाना बिल्कुल बंद कर दिया जबकि सनी ने नियमित रूप से नौ महीने तक पैसा बचाना जारी रखा। यद्यपि इस नौ महीने की अवधि में सनी ने अपनी बचत में से कुछ पैसा खर्च किया था। एक साल के बाद उन्हों ने अपनी बचत–राशियों की तुलना की।

सनी और बॉबी की बचत तालिका

महीना	सनी			बॉबी		
	जेब खर्च (क)	खर्चे (ख)	बचत (क–ख)	जेब खर्च (क)	खर्चे (ख)	बचत (क–ख)
जनवरी	100	50	50	100	50	50
फरवरी	100	50	50	100	50	50
मार्च	100	50	50	100	50	50
अप्रैल	150	70	80	150	70	80
मई	150	70	80	80	60	20
जून	150	100	50			
जुलाई	200	70	130			
अगस्त	200	70	130			
सितंबर	200	120	80			
अक्तूबर	250	100	150			
नवंबर	250	50	200			
दिसंबर	250	100	150			
कुल	**2100**	**900**	**1200**	**530**	**280**	**250**

अभ्यास

1) मई के अंत में किसके पास ज्यादा शेष राशि थी?

.....

2) मई के अंत में सनी की शेष राशि कितनी थी?

3) अप्रैल के अंत में बॉबी की कुल बचत कितनी है?

.....

4) वर्ष के अंत में किसके पास ज्यादा शेष राशि है?

.....

5) बॉबी की शेष राशि में मई से साल के अंत तक कोई वृद्धि क्यों नही हुई?

.....

1) बॉबी ने ———————————— महीने बाद बचत करना बंद कर दिया था।

क) पाँच　　ख) छह
ग) नौ　　घ) चार

2) सनी ने .....महीने तक नियमित बचत की।

क) पाँच　　ख) छह
ग) नौ　　घ) चार

आओ वर्ग पहेली
हल करें, राशि !

हाँ हम खूब मजे से
यह पहेली हल करेंगे सेफ।

वर्गपहेली

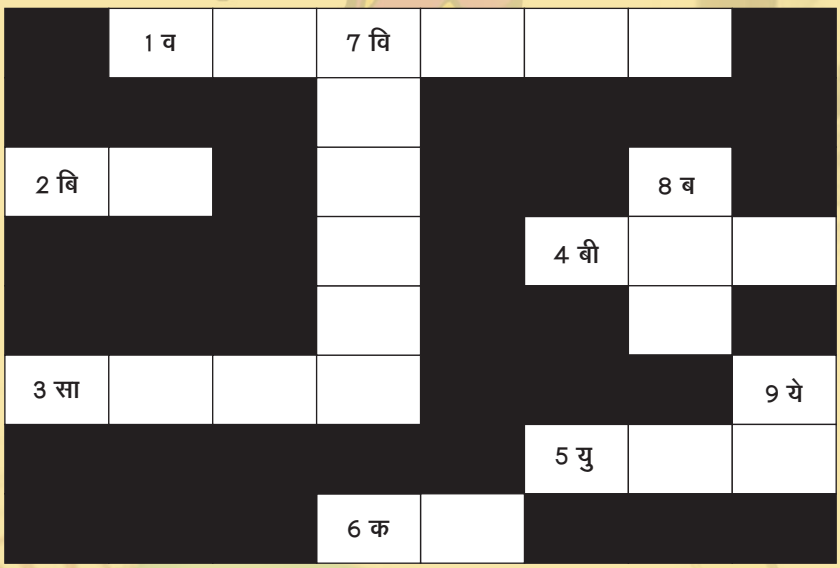

बाँये से दाँये

1. धन के बिना वस्तुओं का लेन–देन
2. खरीदी गई वस्तुओं के ब्योरे का कानूनी दस्तावेज
3. कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह, जो धन उधार देता हो
4. क्रेता या ऋणी से प्राप्य राशि के ब्योरे का दस्तावेज
5. चीन की मुद्रा (करेंसी) का नाम
6. नागरिकों द्वारा सरकारी खजाने में किया जाने वाला अनिवार्य अंशदान

ऊपर से नीचे

7. दो देशों के बीच वस्तुओं का लेन–देन
8. नियत समयावधि के दौरान आय–व्यय का अनुमान
9. जापान की मुद्रा का नाम

आओ मुनाफ और पहेली हल करें।

खेल–खेल में सीखना, बड़े मजे की बात है

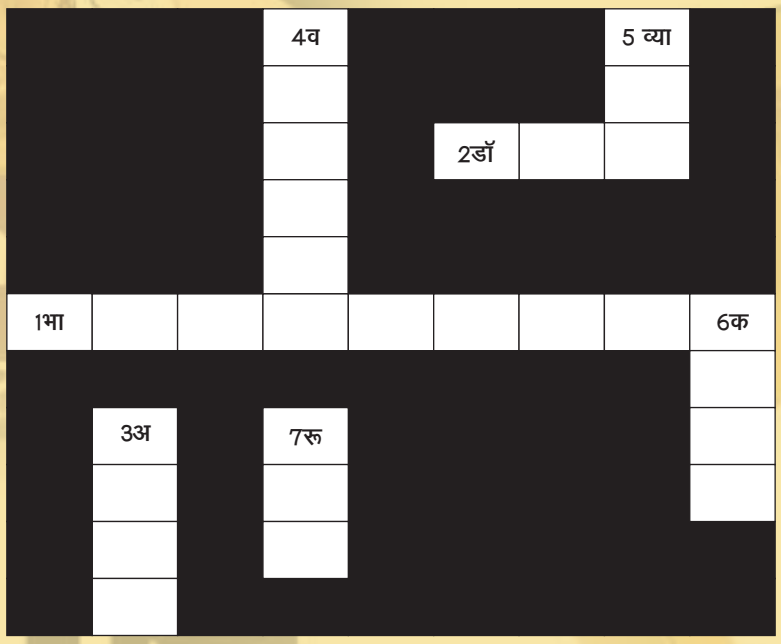

बाँये से दाँये

1. ———————————————————————— भारत सरकार की ओर से नोट और सिक्के– जारी करता है।
2. $ यह चिह्न संयुक्त– राज्य अमेरिका में प्रयुक्त मुद्रा का प्रतीक है।

ऊपर से नीचे

3. ———————————— का लेखक चाणक्य है। इस ग्रंथ में सुव्यवस्थित कर प्रणाली का वर्णन है।
4. ———————————————————— वह प्रणाली है, जिसमें धन के बिना वस्तुओं और सेवाओं का ले–देन होता है।
5. किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का स्वामित्व, विनिमय में कोई अन्य वस्तु या सेवा प्राप्त करके किसी दूसरे व्यक्ति को अंतरित कर देना ———————————— कहलाता है।
6. ———————————— से सरकार को वृहद् राजस्व की बहुत बड़ी राशि जमा करने में मदद मिलती है।
7. शेरशाह सूरी ने एक चॉदी का सिक्का जारी किया था, जो———————————— कहलाया।

वस्तु–विनिमय और बचत
महाराजा सवाई मानसिंह विद्यालय, जयपुर द्वारा लिपिबद्ध किया गया
चित्रांकन: माधव गुप्ता, बाल भारती विद्यालय, रोहिणी, दिल्ली
बिल और कर
तनीशा पुरी

मेरे पास शीतल पेय है। क्या तुम मुझे बदले में अपनी चिप्स दोगे
मुझे शीतल पेय नहीं कॉफी चाहिए
तुम धन का इस्तेमाल करो, इससे तुम कुछ भी खराद सकते हो।
मुझे मालूम है समस्या, क्या है, तुम कॉफी का मजा लेना चाहते हो।
मैं कॉफी का एक टिन खरीदना चाहता हूँ, जो रु.20/– में आएगा पर मेरे पास केवल रु.18/– हैं.
ओहो! खर्च करने के लिए तुम्हें बचत करने की जरूरत है।
आओ चलें दोपहर का भेजना करें।
हाँ, आओ चलें।
यह सुनिश्चित करो कि हम रु.400/– से अधिक के खाने का आदेश (ऑर्डर) न करें।
चलो बिल मांगें।
हमें बिल की मांग सदैव करनी चाहिए
अरे, यह क्या। हमने रु.380/– के खाने का आदेश दिया था तो फिर यह रु.426/– का बिल क्यों है।
यह करों की वजह से है, जो खाद्य पदार्थों पर लागू होते हैं।

प्रस्तुति :

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
दिल्ली
असतो मा सद्गमय

राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केन्द्र
National Centre for Financial Education